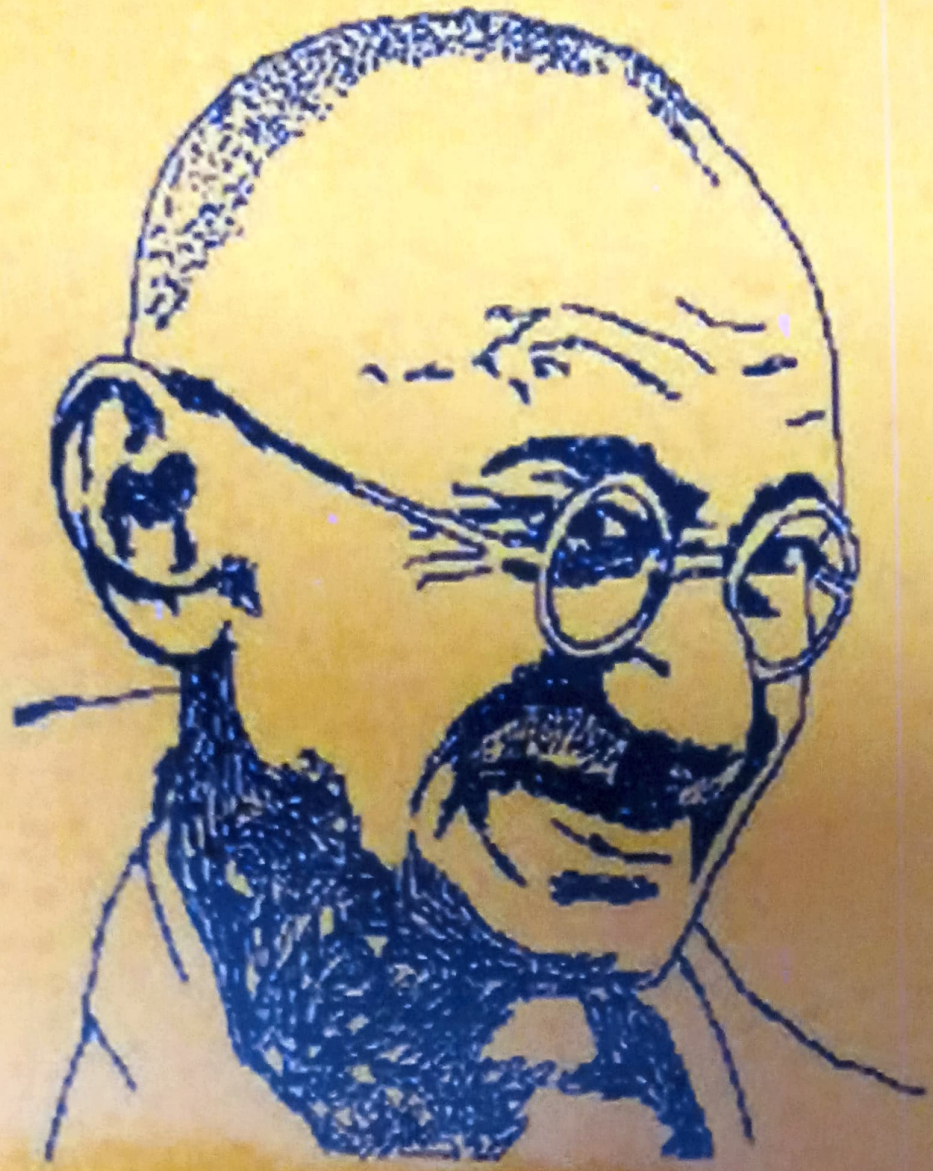

साहित्य और संस्कृति के प्रहरी गाँधी

संपादक

डॉ. संध्या द्विवेदी

डॉ. अरूण कुमार चतुर्वेदी

अर्णब एंटरप्राइसेस
4697/3, तृतीय तल, 21-ए, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
E-mail : arnabenterprisesdelhi@gmail.com

© संध्या द्विवेदी, अरुण कुमार चतुर्वेदी

प्रथम संस्करण : 2020

आई.एस.बी.एन. : 978-81-936585-1-2

मूल्य : ₹199

लेजर टाइप सैटिंग :
शिवानी कम्प्यूटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो. : 9811955958

मुद्रक :
मिलन एंटरप्राइसेस
नई दिल्ली

9. गाँधीजी के व्यक्तित्व पर श्रीमद्भगवतगीता का प्रभाव
—डॉ. आभा शर्मा

10. नैतिक मूल्यों के पैरोकार गाँधी
—भावना उपाध्याय

11. गाँधीवादी विचारों के सन्दर्भ में सोहनलाल द्विवेदी के काव्य का मूल्यांकन
—डॉ. अनुपमा चतुर्वेदी, स्नेहलता

12. गाँधी जी का जीवन नैतिकता की सर्वोच्च पाठशाला है
—डॉ. रतन कुमारी वर्मा

13. अहिंसा परमोधर्मः
—सुनीता कलौनी

14. हिंदी भाषा के प्रति बापू को विचार धारा और प्रदेय
—बृजेश कुमार तिवारी

15. वर्तमान सन्दर्भ में युवा एवं गांधी दर्शन
—डॉ. श्रीमती स्वाती जाजू

16. गाँधी विचार एवं मूल्य
—डॉ. शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय

17. सत्य अहिंसा के प्रणेता : महात्मा गांधी
—डॉ. संध्या गड़कोटी

18. प्रेमचन्द के उपन्यास 'रंगभूमि' एवं 'गोगदान' के परिपेक्ष्य में गांधीवाद
—कु. शिवानी

19. लोक साहित्य और संस्कृति प्रतिबिम्बित गाँधी
—सोनू कुमार

20. गाँधी के सत्य और अहिंसा की प्रासंगिकता
—डॉ. शशिबाला वर्मा

20

गाँधी के सत्य और अहिंसा की प्रासंगिकता

डॉ. शशिबाला वर्मा[1]

महात्मा गाँधी एक ऐसा नाम जिसे सुनकर प्रत्येक व्यक्ति नतमस्तक हो जाता है। भारत की पहचान हैं गाँधी। आप एक ऐसे लोकप्रिय जननायक, योद्धा, राजनीतिज्ञ थे जिन्होने सर्वाधिक शक्तिशाली अंग्रेजी शासन को बिना किसी आधुनिक हथियार के पराजित किया उनके सिर्फ दो शस्त्र थे सत्य और अहिंसा जिनके बल पर अपनी दृढ़इच्छा शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को अपना लोहा मनबाया।

कतिपय लोगों की धारणा है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी के विचार मेल नहीं खाते लेकिन वर्तमान विचारधारा को अपनाकर हमने क्या पाया? विश्व परमाणु बम, अनेकानेक घातक मिसाइलों व अन्य विनाशकारी हथियारों के जखीरें पर बैठा हुआ आत्महत्या की स्थिति में पहुँच गया है।

गाँधी के अनुसार सत्यता से किये गये आत्मविश्लेषण के द्वारा अगाध शक्ति एवं प्रार्थना से अपनी बुद्धि के सही उपयोग से राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान सभी क्षेत्रों से संबंधित प्रश्नों और समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

मेरा सब कार्य विश्वकल्याण और राजनीतिक क्षेत्र में सारी चेष्टाऐं इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से है। सत्य और अहिंसा ही मेरा बल है। जब सत्य मेरे माध्यम से बोलता है तो मैं अपराजय हो जाता हूँ। मानवमात्र का हित ही मेरे लिए सर्वोपरि है। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा

1. संस्कृत विभाग, स. भ. सि. रा. स्ना. महा, रूद्रपुर।

कश्चिद् खमाग भवेत।

अहिंसा हमारी जाति का लक्षण है और हिंसा पशु जाति का। मानव के पास जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह है अहिंसा। अहिंसा दुनिया का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है। जिसे गाँधी ने अपने बुद्धि विवेक से सर्वाधिक शक्तिशाली हथियार बना लिया अहिंसा निर्बल व्यक्ति का आश्रय या सहारा न होकर भौतिक शक्ति को नतमस्तक करने की कला है। जब मनुष्य के मन में कोई राग, द्वेष, घृणा जैसे विकार नहीं होते तब नैतिक साहस आ जाता है जो अन्यायी दुराचारी का हृदय परिवर्तन कर देता है।

गाँधी जी का सम्पूर्ण चिंतन सत्य और अहिंसा के नैतिक आदर्शों पर आधारित है। गाँधी ने सभी धर्मों के प्रति सम्मान आदर प्रकट किया है और धार्मिक सहिष्णुता को महत्व दिया, जिसका तात्पर्य अन्य धर्मों को भी अपने धर्म के समान महत्व देना आपका मत था राजनीति भाई-भतीजावाद, स्वार्थ से परे लोकनीति पर आधारित हो उसमें अनैतिकता, असत्यता, हिंसा का कोई स्थान न हो जैसा आज चारों ओर परिलक्षित हो रहा है। महात्मा गाँधी सर्वधर्म समभाव का प्रबल समर्थन करते हुए कहते हैं दूसरे धर्मों के प्रति समानता रखने से अपने धर्म का अपूर्णता स्वीकारना भी आ जाता है। सत्य की आराधना, अहिंसा की कसौटी यही सिखाती है। सम्पूर्ण सत्य को हमने देख पाया होता तो फिर सत्य के आग्रह की क्या बात थी? तब तो हम परमेश्वर हो गये होते, क्योंकि हमारी भावना है कि सत्य ही परमेश्वर है। हम पूर्व सत्य को पहचानते नहीं इसलिए उनका आग्रह करते हैं। इसी से पुरुषार्थ की गुंजाईश है।

आज दुनिया को जिन संकटों का सामना करना पड़ रहा है, उनका समाधान गाँधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत में ही निहित है। हम सब आशावादियों को तब तक शांत नहीं बैठना चाहिए जब तक इन्हें अपने कर्म और विचार का हिस्सा न बना लें। जिस तरह सूर्य और चन्द्र के बिना दुनिया की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार सत्य और अहिंसा-दो आदर्शों के बिना विश्व में शान्ति की कल्पना सम्भव नहीं। दुनिया के सभी देशों में एकता को बढ़ावा देने वाले सामाजिक, नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का स्थान फूट डालने वाली, विघटनकारी ताकतें लेती जा रही है। परिवार, गाँव, शहर जाति-समूह जैसे सामाजिक संस्थाएँ विघटित होती जा रही है। सामूहिकता का स्थान व्यक्तिवाद ले रहा है, नैतिक मूल्यों का ह्रास व निजीकरण बढ़ रहा है। असत्यता और हिंसा बढ़ रही है।

आधुनिक सभ्यता का लक्ष्य भौतिक उन्नति है और इसके लिए नई-नई तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है, तकनीक पर्यावरण को नष्ट कर उपभोग और हिंसा को बढ़ावा दे रही है। इस सबसे बचने के लिए पुनः गाँधी के मार्ग पर चलना होगा। गाँवों को विकास के केन्द्र में लाकर वैकल्पिक तकनीक, स्वदेशी प्रचार-प्रसार, सर्वोदय को महत्व देना होगा। अर्नाल्ड टायन्बी ने ठीक ही कहा है- मानव इतिहास के सबसे खतरनाक मोड़ पर मनुष्य के मुक्ति का एकमात्र विकल्प भारतीय पद्धति है सम्राट अशोक और गाँधी के अहिंसा के सिद्धांत धर्मों के मध्य सद्भाव कायम करने की उनकी घोषणा।

आचार्य राधाकृष्णन के अनुसार 'वे दुनिया के दुःख के प्रति अति संवेदनशील थे और चाहते थे कि हर आँख का आँसू पोंछ सकें।'

आपके विचार आज भी प्रासंगिक है यथा महात्मा गाँधी ने धर्म को व्यापक रूप प्रदान करते हुए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उसके साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया। उनका आग्रह बिशेषकर नैतिकता पर आधारित समाज की स्थापना से था। उदारता, सहिष्णुता, समभाव पर आधारित उनका मानव धर्म आज के दौर में बढ़ते हुए धार्मिक कट्टरवाद, उग्रवाद, हिंसा तथा पदलोलुपता, नैतिकपतन, दूषित राजनीति इत्यादि पर लगाम लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। गाँधी का प्रभाव और प्रासंगिकता शाश्वत और सार्वलौकिक है।

सन्दर्भ सूची

1. मो. क. गाँधी-सम्पूर्ण गाँधी वाड.गूमयखण्ड 20
2. सम्पादित गाँधी-व्यक्तित्व, विचार भूमिका पृ.2
3. हिन्दस्वराज-महात्मा गाँधी-सस्ता साहित्य भण्डार प्रकाशन
4. गाँधी व गाँधीगीरी-प्रवीन शुक्ल-डायमण्ड पाकेट बुक्स।